17	# नींव की ईंट हो तुम दीदी

उदय प्रकाश

(जन्मः 1952 ई.)

आठवें दशक के कवि उदय प्रकाश का जन्म मध्यप्रदेश के शहडोल (अब अनूपपूर)जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। वे स्नातक कक्षा तक विज्ञान के छात्र रहे, किन्तु बाद में सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। उन्होंने जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में अध्यापन एवं शोध कार्य किया। कुछ वर्ष 'दिनमान' एवं 'पूर्वग्रह' पत्रिका में संपादक का भी काम किया।

समकालीन हिन्दी कविता को एक नई पहचान देनेवाले युवा कवियों में उदय प्रकाश का नाम प्रमुख है। जीवन और समाज के यथार्थ के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता की झलक उनकी कविताओं में साफ नज़र आती है। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं- 'सुनो कारीगर', 'अबूतर-कबूतर' तथा 'रात में हारमोनियम' । उनके कहानी संग्रह हैं 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', तथा 'पॉल गोमरा का स्कूटर'। देश-विदेश की अनेक भाषाओं से अनुवाद किए, पटकथा लिखी; सीरियल तथा डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का निर्माण आदि।

उन्हें भारतभूषण पुरस्कार, ओमप्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान तथा गजानन मुक्तिबोध सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत कविता में होनहार बच्चों के जीवन निर्माण की कथा है, जिनके बचपन को दीदी ने संस्कारित किया है और ज्ञान-दान किया है, बच्चों को दीदी के व्यक्तित्व में अनेक संभावनाएँ दिखाई देती हैं। उन्हें दीदी कभी पीपल की छाँह-सी, कभी ढिबरी के आलोक सी, कभी तरलता-सी तो कभी चट्टान के विश्वास-सी प्रतीत होती हैं। उन्हें दीदी की नई दुनिया में हारिल बनकर जीना भी मंजूर है।

यही कविता की सार्थकता है।

पीपल होती तुम
पीपल, दीदी
पिछवाड़े का, तो
तुम्हारी खूब घनी-हरी टहनियों में
हारिल हम
बसेरा लेते।
हारिल होते हैं हमारी तरह ही
घोंसले नहीं बनाते कहीं
बसते नहीं कभी
दूर पहाड़ों से आते हैं
दूर जंगलों को उड़ जाते हैं।

पीपल की छाँह
तुम्हारी तरह ही
ठंडी होती है दोपहर।

ढिबरी थीं दीदी तुम
हमारे बचपन की
अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बाती में सोखकर
जलती रहीं।
हमने सीखे थे पहले पहल अक्षर
और अनुभवों से भरे किस्से
तुम्हारी उजली साँस के स्पर्श में।

जलती रहीं तुम
तुम्हारा धुआँ सोखती रहीं
घर की गूँगी दीवारें
छप्पर के तिनके-तिनके
धुँधले होते गये

और तुम्हारी
थोड़ी-सी कठिन रोशनी में
हम बड़े होते रहे।

नदी होतीं, तो
हम मछलियाँ होकर
किसी चमकदार लहर की
उछाह में छुपते
कभी-कभी बूँदें लेते
सीपी बन
किनारों पर चमकते।

चट्टान थीं दीदी तुम
सालों पुरानी।
तुम्हारे भीतर के ठोस पत्थर में
जहाँ कोई सोता नहीं निझरता,
हमीं पैदा करते थे हलचल
हमीं उड़ाते थे पतंग।

चट्टान थीं तुम और
तुम्हारी चढ़ती उम्र के ठोस सन्नाटे में
हमीं थे छोटे-छोटे पक्षी
उड़ते तुम्हारे भीतर

वहाँ झूले पड़े थे हमारी खातिर
गुड्डे रखे थे हमारी खातिर
मालदह पकता था हमारी खातिर
हमारी गेंदें वहाँ
गुम हो गयी थीं।

दीदी, अब
अपने दूसरे घर की
नींव की ईंट हुईं तुम तो
तुम्हारी नयी दुनिया में भी
होगी कहीं हमारी खोयी हुई गेंदें
होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने

अब तो ढिबरी हुईं तुम
नये आँगन की
कोई और बचपन
चीन्हता होगा पहले-पहल अक्षर
सुनता होगा किस्से
और यों
दुनिया को समझता होगा।

हमारा क्या है, दिदिया री!
हारिल हैं हम तो
आयेंगे बरस-दो बरस में कभी
दो-चार दिन
मेहमान-सा ठहरकर
फिर उड़ लेंगे कहीं और।

घोंसले नहीं बनाये हमने
बसे नहीं आज तक।
कठिन है
हमारा जीवन भी
तुम्हारी तरह ही।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हारिल एक हरे रंग की चिड़ियाँ जो प्राय: अपने चंगुल में तिनका लिए रहती है **उछाह** उत्साह **मालदह** पेड़ पर पका हुआ आम **चीन्हता** पहचानता **हारिल** एक पक्षी जो अपने पंजे मे एक लकड़ी या तिनका पकड़े रहता है, **ढिबरी** मिट्टी के तेल (केरोसीन) से जलने वाला छोटा गोल मुंहवाला मिट्टि दीपक **तलछट तेल** आचार के बरतन मे नीचे जमा हुआ तेल **उजली साँस** निर्मल-निर्दोष सांस **गूँगी दीवारे** जिस घर में कोई आवाज न होती हो, उस घर की दीवारें

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) हारिल बनकर कवि कहाँ बसेरा करना चाहता है?

(क) वटवृक्ष पर (ख) पीपल के वृक्ष पर

(ग) नीम के पेड़ पर (घ) आम के पेड़ पर

(2 कवि पढ़ना-लिखना किसकी मदद से सीखता है?

(क) दीदी की (ख) माता की (ग) पिता की (घ) भाई की

(3) दीदी यदि नदी है, तो कवि क्या बनना चाहता है?

(क) लहर (ख) उछाह (ग) चट्टान (घ) मछली

(4) दीदी भाई के लिए क्या सामान रखती है?

(क) गुड्डे (ख) मालदह (ग) अमसूद (घ) कैला

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) हारिल कैसा पक्षी है?

(2) दोपहर में ठण्डी छाँह का अनुभव कवि कहाँ करता है?

(3) दीदी के किस्सों से कवि क्या प्राप्त करता था ।

(4) सीपी बनकर कवि क्या करना चाहता था ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) ढिबरी की तरह दीदी क्या कार्य करती हैं?

(2) कवि दीदी को चट्टान की उपमा क्यों देता हैं?

(3) कवि को अपनी दीदी घर की नींव की ईंट के समान क्यों लगती हैं?

(4) जीवन की सार्थकता कवि को कहाँ लगती है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए :

(1) दीदी को दिए गए एक-एक रूपक की क्या विशेषता है?

(2) कविता का केन्द्रीयभाव लिखिए।

(3) आशय स्पष्ट कीजिए -

घोंसले नहीं बनाये हमने, बसे नहीं आज तक, कठिन है, हमारा जीवन भी, तुम्हारी तरह ही।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः भाई-बहन के बचपन के संस्मरण लिखिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः उदय प्रकाश की अन्य कविताओं का आस्वादन कराएँ।

⊙